# SYLLABUS OF GRADE XII

# HINDI

प्रस्तावना:

दसवीं कक्षा तक हिंदी का अध्ययन करने वाला वद्यार्थी समझते हुए पढ़ने वा सुनने के साथ - साथ हिंदी में सोचने और उसे मौखक एवं लखत रूप में व्यक्त कर पाने की सामान्य दक्षता अर्जित कर चुका होता है। उच्चतर माध्यमक स्तर पर आने के बाद इन सभी साहित्यिक बोध के साथ-साथ भाषाई दक्षता के वकास को ज्यादा महत्व देता है। यह करते हुए हिंदी को एक वषय के रूप में पढेंगे या वज्ञान सामाजिक वज्ञान के कसी वषय को माध्यमक स्तर की शक्षा के बाद कसी तरह के रोजगार में लग जाएंगे। वहाँ कामकाजी हिंदी हिंदी का आधारभूत अध्ययन काम आएगा। जिन वद्यार्थयों की रुच जनसंचार माध्यमों में पाठ्यक्रम समान रूप से तरह-तरह के साहित्य के साथ वद्यार्थयों के संबंध को सहज बनाएगा। वद्यार्थी भाषक अभव्यक्ति के सूचना एवं जटिल रूपों से परिचत हो सकेंगे। वे यथार्थ को अपने वचारों में व्यवस्थित करने के साधन के तौर पर भाषा का अधक सार्थक उपयोग कर पाएँगे और उनमें जीवन के प्रति मानवीय संवेदना एवं सम्यक् दृष्टि का वकास हो सकेगा।

उद्देश्य:

- संप्रेषण के माध्यम और वधाओं के लए उपयुक्त भाषा प्रयोग की इनकी क्षमता उनमें आ चुकी होगी क वे स्वयं इससे जुड़े उच्चतर पाठ्यक्रमों को समझ सकेंगे।
- भाषा के अंदर सक्रय सत्ता संबंध की समझ।
- सृजनात्मक साहित्य की समझ और आलोचनात्मक दृष्टि का वकास।
  संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं ववेकपूर्ण रवैये का वकास।

के परीप्रेक्ष्य में देखने का अभ्यास करवाना तथा आलोचनात्मक दृष्टि का वकास करना।

- वद्यार्थयों में स्तरीय साहित्य की समझ और उसका आनंद उठाने की क्षमता तथा साहित्य को श्रेष्ठ बनाने वाले तत्वों की संवेदना का वकास।
- वभन्न ज्ञाननुशासनों के वमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की वशष्ट प्रकृति और उसकी उसकी क्षमताओं का बोध।
- कामकाजी हिंदी के उपयोग के कौशल का वकास।
- जनसंचार माध्यमों (प्रंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से परिचय और इन माध्यमों की आवश्यकता के अनुरूप मौखक एवं लखत अभव्यक्ति का वकास।
- वद्यार्थी में कसी भी अपरिचत वषय से संबंधत प्रासंगक जानकारी के स्रोतों का अनुसंधान और व्यवस्थित ढंग से उनकी मौखक और लखत प्रस्तुति की क्षमता का वकास।

शक्षण - युक्तियां

- कुछ बातें इस स्तर पर हिंदी शक्षण के लक्ष्यों के संदर्भ में समान रूप से कही जा सकती हैं। एक तो यह है क शक्षा में दबाव एवं तनाव मुक्त माहौल होने की स्थिति में ही ये लक्ष्य हासल कए जा सकते हैं। चूँक इस पाठ्यक्रम में तैयारशुदा उत्तरों को के आधार पर उत्तर को शब्दबद्ध करने की योग्यता वकसत करना ही शक्षक का काम काम है। इस योग्यता के वकास के लए कक्षा में वद्यार्थयों और शक्षका के बीच निर्बाध संवाद जरूरी है। वद्यार्थी अपनी शंकाओं और उलझनों को जितना ही अधक

- भाषा की कक्षा से समाज में मौजूद वभन्न प्रकार के द्वंद्वों पर बातचीत का मंच बनाना चाहिए। उदाहरण के लए संवधान में कसी शब्द वशेष के प्रयोग पर निषेध को को चर्चा का वषय बनाया जा सकता है। यह समझ जरूरी है क वद्यार्थयों को सर्फ सकारात्मक पाठ देने से काम नहीं चलेगा बल्कि उन्हें समझाकर भाषक यथार्थ का सीधे सामना करवाने वाले पाठों से परिचय होना जरूरी है।
- शंकाओं और उलझनों को रखने के अलावा भी कक्षा में वद्यार्थयों को अधक से अधक अधक बोलने के लए प्रेरित कया जाना जरूरी है। उन्हें यह एहसास कराया जाना

चाहिए क वह पाठित सामग्री पर राय देने का अधकार और ज्ञान रखते हैं। उनकी राय को प्राथमकता देने और उसे बेहतर तरीके से पुनः प्रस्तुत करने की अध्यापकीय शैली यहाँ बहुत उपयोगी होगी।

- वद्यार्थयों को संवाद में शामल करने के लए यह भी जरूरी होगा क उन्हें एक नामहीन समूह ना मानकर अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में अहमयत दी जाए। पक्के वक्तव्य को मानक भाषा-शैली में ढाल कर उसे एक आभा दे देते हैं और मौन को अभव्यंजना मान बैठे लोगों को मुखर होने पर बाध्य कर देते हैं।

- अप्रत्याशत वषयों पर चंतन तथा उसकी मौखक व लखत अभव्यक्ति की योग्यता का का वकास शक्षकों के सचेत प्रयास से ही संभव है। इसके लए शक्षकों को एक निश्चित अंतराल पर नए-नए वषय प्रस्तावत कर उन पर लखने तथा संभाषण करने कोई सीमा तय नहीं की जा सकती। वषय की असीम संभावना के बीच शक्षक यह सुनिश्चित कर सकते हैं क उसके वद्यार्थी कसी निबंध - संकलन या कुंजी से सही मुक्ति पाकर वद्यार्थी नए तरीके से सोचने और उसे शब्दबद्ध करने के लए तैयार अभ्यास के सलसले में शक्षकों को उचत हाव-भाव, मानक उच्चारण, पॉज, बलाघात, बलाघात, हाजिरजवाबी इत्यादि पर खास बल देना होगा।

- काव्य की भाषा से मर्म से वद्यार्थी का परिचय कराने के लए जरूरी होगा क कताबों में आए काव्यांशों की लयबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडयो-वीडयो कैसेट तैयार कए जाएं। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के शक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- एन सी ई आर टी, मानव संसाधन वकास मंत्रालय के वभन्न संगठनों तथा स्वतंत्र शक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की जरूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन इन पर लगातार बातचीत के जरिए सनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की वशष्टता

वशष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग - अलग छटा दिखाई जा सकती है। वद्यार्थयों को स्तरीय परीक्षा करने को भी कहा जा सकता है।

- कक्षा में सर्फ एक पाठ्यपुस्तक की उपस्थिति से बेहतर यह है क शक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्री को वद्यार्थी देख सकें और शक्षक उनका कक्षा में अलग-अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सकें।

  की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे वद्यार्थयों में इसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे सही अर्थ की खोज करने के लए प्रेरित होंगे। इससे शब्दों की अलग-अलग रंगत का पता चलेगा और उनमें संवेदनशीलता बढ़ेगी। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएँगे।

समाधान कार्य, समूहचर्चा, परियोजनाकार्य, स्वाध्याय आदि पर बल दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में जनसंचार माध्यमों से संबंधत अंशों को देखते हुए यह जरूरी है क समय-समय पर इन माध्यमों से जुड़े व्यक्तियों और वशेषज्ञों को भी वद्यालय में बुलाया जाए तथा उनकी देख-रेख में कार्यशालाएँ आयोजित की जाएं।

- भन्न क्षमता वाले वद्यार्थयों के लए उपयुक्त शक्षण सामग्री का इस्तेमाल कया जाए जाए तथा उन्हें कसी भी प्रकार से अन्य वद्यार्थयों से कमतर या अलग ना समझा जाए।

  सकारात्मक और संवेदनशील वातावरण निर्मत करना चाहिए।

<u>आंतरिक मूल्यांकन हेतु</u>

<u>श्रवण तथा वाचन परीक्षा हेतु दिशा - निर्देश</u>

श्रवण (सुनना) (5 अंक): वर्णत या पाठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना, वार्तालाप करना, वाद-ववाद, भाषण, कवतापाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभव्यक्ति के ढंग को समझना।

टिप्पणी: वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय ही होगा। निर्धारित **10** अंकों में से 5 श्रवण (सुनना) कौशल के मूल्यांकन के लए और 5 वाचन वाचन (बोलना) कौशल के मूल्यांकन के लए होंगे।

वाचन (बोलना) एवं श्रवण (सुनना) कौशल का मूल्यांकन:

- परीक्षक कसी प्रासंगक वषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद तथात्मक यह सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग **250** शब्दों का होना चाहिए।

या

परीक्षक 2-3 मनट का श्रव्य अंश (ऑडयो क्लिप) सुनावाएगा। अंश रोचक होना चाहिए। कथ्य/ घटना पूर्ण एवं स्पष्ट होनी चाहिए। वाचक का उच्चारण शुद्ध, स्पष्ट वराम चन्हों के उचत प्रयोग सहित होना चाहिए।

- परीक्षार्थी ध्यानपूर्वक परीक्षक/ऑडयो क्लिप को सुनने के पश्चात परीक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का अपनी समझ से मौखक उत्तर देंगे। (1x5**=5)**
- कसी निर्धारित वषय पर बोलना: जिससे वद्यार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभवों का प्रत्यास्मरण कर सकें।
- कोई कहानी सुनाना या कसी घटना का वर्णन करना
- परिचय देना
  (स्व/ परिवार/ वातावरण/ वस्तु/ व्यक्ति/ पर्यावरण/ कव/ लेखक आदि)
- परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को तैयारी के लए कुछ समय दिया जाए।
- ववरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षत है।
- निर्धारित वषय परीक्षार्थी के अनुभव जगत के हों।
- जब परीक्षार्थी बोलना आरंभ करें तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

## कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन

**(इस बात का निश्चय करना क क्या वद्यार्थी में श्रवण और वाचन की निम्नलखत योग्यताएं हैं)**

| क्र.सं. | श्रवण (सुनना) | वाचन (बोलना) |
|---|---|---|
| **1.** | परिचत संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है। | केवल अलग-अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शत करता है। |
| **2.** | छोटे सुसबंद्ध कथनों को परिचत संदर्भों में समझने की योग्यता है | परिचत संदर्भों में केवल छोटे से संबद्ध कथनों का सीमत शुद्धता से प्रयोग करता है। |
| **3.** | परिचत या अपरिचत दोनों संदर्भों में कथत सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है। | अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शत करता है। |
| **4.** | दिर्घ कथनों की श्रंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझने के ढंग और निष्कर्ष निकाल सकने की योग्यता है। | अपरिचत स्थितियों में वचारों को तार्कक ढंग ढंग से संगठित कर धारा - प्रवाह रूप में प्रस्तुत करता है। |
| **5.** | जटिल कथनों के वचार - बिंदुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शत करने की क्षमता है। | उद्देश्य और श्रोता के लए उपयुक्त शैली को अपना सकता है। |

परियोजना कार्य - कुल अंक 10

वषय वस्तु - 5 अंक

भाषा एवं प्रस्तुति - 3 अंक

शोध एवं मौलकता - 2 अंक

- हिंदी भाषा और साहित्य से जुड़े ववध वषयों / वधाओं / साहित्यकारों / समकालीन लेखन / साहित्यिक वादों / भाषा के तकनीकी पक्ष / प्रभाव / अनुप्रयोग / साहित्य के सामाजिक संदर्भों एवं जीवन मूल्य संबंधी प्रभावों आदि पर परियोजना कार्य दिए जाने चाहिए।

  और लेखन के लए पर्याप्त समय मल सके।

- वाचन - श्रवण कौशल एवं परियोजना कार्य का मूल्यांकन वद्यालय स्तर पर आंतरिक परीक्षक द्वारा ही कया जायगा।

# हिंदी

## कक्षा 12

| खंड | वषय | | अंक |
|---|---|---|---|
| (क) | अपठित अंश | | 15 |
| | 1 | अपठितगद्यांश -बोध (गद्यांश पर आधारितबोध, प्रयोग, शीर्षक आदि पर10 बहुवकल्पी / अतिलघुरात्मकप्रश्न 1 अंक (1x10) | 10 |
| | 2 | अपठित काव्यांश पर आधारितबोध ( गद्यांश पर आधारितबोध, प्रयोग, रचनांतरण , शीर्षक आदि पर 5 बहुवकल्पी /अतिलघुरात्मक प्रश्न 1 अंक (1x5) | 05 |
| (ख) | कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन (अभव्यक्ति और माध्यम पुस्तक आधार पर ) | | 25 |
| | 3 | दिए गए नए और अप्रत्याशत वषयो में से कसी एक वषय पर रचनात्मक लेखन (वकल्प सहित) (निबंधनात्मकप्रश्न ) | 05 |
| | 4 | कार्यालयी पत्र (वकल्प सहित) (निबंधनात्मकप्रश्न ) | 05 |
| | 5 | वभन्न माध्यमों के लए पत्रकारीय लेखन और उसके ववध आयामों आयामों पर आधारित 5 बहुवकल्पी प्रश्न (1x5) | 05 |
| | 6 | कवता /कहानी /नाटक की रचना प्रक्रया पर आधारित प्रश्न सम्बंधत सम्बंधत दो लघुउत्तरिय प्रश्न (एकतीनवएकदोअंकका) (वकल्प सहित) (3x1)+(2x1) | 05 |
| | 7 | समाचार लेखन (उल्टा परामड शैली) / फीचर लेखन / आलेख लेखन लेखन सम्बंधत दो लघुउत्तरीय प्रश्न - (एकतीनवएकदोअंकका) (वकल्प सहित) (3x1)+(2x1) | 05 |
| (ग) | पाठ्यपुस्तक | | 40 |
| | (1) | आरोह भाग -2 | 30 |
| | (अ) | काव्य भाग | 15 |
| | 8 | कसी एक काव्यांश पर अर्थग्रहण से संबंधत तीन प्रश्न (2x3) वकल्प सहित | 06 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | 9 | काव्यांश के सौंदर्यबोध पर दो लघुउत्तरीय प्रश्न (**2x2**) (वकल्प सहित) | 04 |
| | 10 | कवताओं की वषयवस्तु पर आधारित दो लघु उत्तरीय – (एकतीनवएकदोअंकका) (वकल्प सहित) (3**x**1)+(2**x**1) | 05 |
| | (ब) | गद्य भाग | 15 |
| | 11 | दो गद्यांशों में से कसी एक गद्य पर आधारित अर्थग्रहण संबंधत तीन प्रश्न (2**x**3) | 06 |
| | 12 | पाठों की वषयवस्तु पर आधारित चार में से तीन बोधात्मक प्रश्न। (3+3+3) | 09 |
| | (2) | वतान भाग - 2 | 10 |
| | 13 | पाठों की वषयवस्तु पर आधारित चार लघुउत्तरीय दोतीन अंकों के दोदो अंकों के प्रश्न (वकल्प सहित) (3**x**2)+(2**x**2) | 10 |
| (घ) | (क) | श्रवण तथा वाचन - 10 | 20 |
| | (ख) | परियोजना - 10 | |
| | कुल | | 100 |

प्रस्तावत पुस्तकें :


**2.** वतान, भाग **-2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशत

**3.** 'अभव्यक्ति और माध्यम', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशत।